

डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 23, ओबद्याह

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह ओबद्याह पर व्याख्यान 23 है।

पवित्रशास्त्र के कैनन का ईमानदारी से पढ़ना हमें बाइबल के उन हिस्सों के साथ बातचीत करने के लिए मजबूर करता है जो हमें असहज करते हैं, साथ ही उन अंशों के साथ भी जो हमें पसंद हैं और भगवान की भलाई और भगवान के प्यार और भगवान की दया के बारे में बात करने में मज़ा आता है।

कैनन के उन असहज भागों में से एक निश्चित रूप से 12 की पुस्तक में ये पुस्तकें होंगी जो नहूम की पुस्तक में ईश्वर की हिंसा और अशूरियों के खिलाफ ईश्वर के न्याय के बारे में बात करती हैं। और हम ओबद्याह की पुस्तक में एदोमियों के खिलाफ ईश्वर के न्याय के बारे में बात करने जा रहे हैं। लेकिन अंततः, वहाँ मौजूद अप्रिय भागों के बावजूद, मुझे नहीं लगता कि हम केवल इसलिए संपादित या हटा देते हैं क्योंकि वे किसी तरह हमारी आधुनिक संवेदनाओं और संवेदनशीलताओं के साथ संघर्ष करते हैं।

हम परमेश्वर की उस तस्वीर के साथ बातचीत करते हैं, और हम उससे सीखते हैं, और हम उसके ज़रिए बढ़ते हैं। और हम इसके ज़रिए रहस्य सीखते हैं कि कैसे परमेश्वर दुष्ट राष्ट्रों और दुष्ट सेनाओं और हिंसा और युद्ध का उपयोग करता है, यहाँ तक कि एक पतित दुनिया में भी, किसी अर्थ में, अपने न्याय को पूरा करने के लिए जब तक कि राज्य में अंतिम समाधान न हो जाए। और परमेश्वर हमसे इस बीच में उस पर भरोसा करने और एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए कहता है जो सही काम करेगा।

और उत्पत्ति में सवाल पूछा गया है, क्या पृथ्वी का न्यायी वही नहीं करेगा जो सही है? और मुझे लगता है कि अंततः यही जवाब हमें नहूम और ओबद्याह की पुस्तक पढ़ने पर मिलता है। भले ही हम सभी मुद्दों और ईश्वरवाद और वहाँ उठाई गई समस्याओं को न समझ पाएँ, लेकिन इन पुस्तकों में उद्धार का एक अविश्वसनीय वादा भी है। परमेश्वर अपने लोगों को बचाएगा।

परमेश्वर राष्ट्र पर प्रभुता रखता है। यह हिंसा अंततः प्रबल नहीं होगी, और परमेश्वर अपने लोगों को बचाएगा। वह उन्हें निर्वासन से बाहर निकालेगा, और अंततः, वह शांति का राज्य स्थापित करेगा जहाँ तलवारों को पीटकर हल के फाल बनाए जाएँगे।

पुराने नियम में युद्ध का महिमामंडन नहीं किया गया है। यह युद्ध को ऐसी चीज़ के रूप में प्रस्तुत करता है जिससे परमेश्वर अंततः मानवता को मुक्ति दिलाएगा। इसलिए, यहाँ आशा के संदेश और परमेश्वर के न्याय के सकारात्मक पहलुओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

जैसा कि हम परमेश्वर के न्याय के विचार को देखते हैं, ओबद्याह पर जाने से पहले मैं नहूम के संदर्भ में कुछ अन्य बातें बताना चाहता हूँ। हम नहूम की पुस्तक में परमेश्वर के न्याय के विचार को स्पष्ट रूप से देखते हैं जिस तरह से पुस्तक नीनवे और अश्शूरियों पर आने वाले भाग्य के उलटफेर के बारे में बात करती है। वे भयानक चीजें और भयानक चीजें जो उन्होंने अन्य लोगों के साथ की हैं, हमें यह समझने के लिए देखना होगा कि परमेश्वर उनके खिलाफ विशिष्ट न्याय और हिंसा क्यों ला रहा है।

क्योंकि परमेश्वर अंततः उनके सिर पर उनके द्वारा किए गए न्याय या अन्य राष्ट्रों के साथ उनके द्वारा किए गए दुष्ट कार्यों का बदला लेगा। हमने बेबीलोन क्रॉनिकल को पढ़ते हुए भी इसे देखा है। बेबीलोन ने अश्शूर के साथ जो किया, उसकी प्रतिध्वनि स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि अश्शूरियों ने अन्य लोगों के साथ क्या किया।

नहूम की पुस्तक में कई तरीके हैं जिनसे भाग्य के पलटने और अश्शूर को उसके उचित फल मिलने के विचार को उजागर किया गया है। कुछ बयानबाजी, विचारधारा और कल्पना जो अश्शूरियों ने खुद के बारे में बात करने के लिए इस्तेमाल की थी, नहूम की पुस्तक में इस्तेमाल की गई है और उनके खिलाफ उस न्याय की बात करने के लिए इस्तेमाल की गई है जो प्रभु उनके खिलाफ लाएगा। उदाहरण के लिए, अश्शूर के राजा अक्सर अपनी सेनाएँ पेश करते थे और अक्सर खुद को या अपने देवताओं को तूफान के देवताओं की तरह पेश करते थे जो उनके आस-पास के लोगों को अभिभूत कर देते थे, जो उन लोगों को अभिभूत कर देते थे जिन्हें उन्होंने जीत लिया था और तूफान की तरह अधीन कर दिया था।

अश्शूर के राजाओं में से एक ने कहा कि यह एक प्रचंड बाढ़ है जो सब कुछ मिटा देती है, या अश्शूरियों का देवता, आदाद, एक तूफानी देवता है। राजाओं में से एक कहता है; मैं अपनी आवाज़ ऊँची करता हूँ, तूफान की तरह गड़गड़ाहट करता हूँ। तो, इसे पलटने के लिए, नहूम कहने जा रहा है, नहीं, यह आदाद नहीं है, यह अश्शूर नहीं है।

ईश्वर स्वयं एक तूफान है। हिंसा और दुष्ट लोग इस लड़ाई में जीत नहीं पाएंगे। वे इस लड़ाई को नहीं जीत पाएंगे।

यही इस पुस्तक की आशा है। अंततः ईश्वर जीतता है क्योंकि वह तूफान है। वह तूफान का देवता है।

और जिस तरह से अश्शूरियों ने इस्राएल और यहूदा तथा अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध तूफान की तरह आक्रमण किया है, उसी तरह से परमेश्वर उनके विरुद्ध कार्य करने जा रहा है। अध्याय एक की चौथी आयत कहती है कि परमेश्वर, योद्धा के रूप में, समुद्र को डांटता है और उसे सुखा देता है। वह सभी नदियों को सुखा देता है, पहाड़ उसके सामने काँप उठते हैं, पहाड़ियाँ पिघल जाती हैं, और पृथ्वी उसके सामने और दुनिया और उसमें रहने वाले सभी लोगों के सामने हिल जाती है।

इसलिए, अश्शूर के राजा अक्सर अपने दुश्मनों को सिर्फ अपनी आवाज़ की गर्जना से हराने की बात करते थे। खैर, परमेश्वर परम तूफान देवता है, और परमेश्वर अंततः अश्शूरियों पर विजय प्राप्त करने जा रहा है। श्लोक 14 कहता है कि प्रभु ने तुम्हारे बारे में एक आज्ञा दी है।

तेरा नाम तेरे देवताओं के भवन में कभी न मिटेगा। मैं तेरी खुदी हुई मूरत को काट डालूंगा। मैं तेरी कब्र बनाऊंगा, क्योंकि तू धिनौना है।

और इसलिए, प्रभु अशशूर के तूफानी देवताओं के खिलाफ लड़ने जा रहा है और वह उन्हें परास्त करके उन पर विजय प्राप्त करने जा रहा है। अध्याय एक पद सात और आठ, प्रभु अच्छा है। वह संकट के दिन में एक गढ़ है।

वह उन लोगों को जानता है जो उसकी शरण में आते हैं, लेकिन एक प्रचंड बाढ़ के साथ, वह अपने विरोधियों का पूरी तरह से अंत कर देगा और अपने शत्रुओं का पीछा अंधकार में कर देगा। जैसे ही यह न्याय आता है और जैसे ही अशशूरियों पर यह हिंसा और विनाश होता है, इसके विपरीत, परमेश्वर अपने लोगों के लिए शरण प्रदान करेगा। अब, नहूम यहाँ प्रचंड बाढ़ और तूफान के देवता के रूप में परमेश्वर के बारे में जो बोल रहा है, वह सीधे उस न्याय को उलट देता है जिसे यशायाह ने अशशूरियों के हाथों यहूदा के खिलाफ यशायाह की पुस्तक में घोषित किया था।

यशायाह की पुस्तक के अध्याय पाँच की 29 से 30 आयतों में यह कहा गया है। मुझे खेद है, मुझे इसे रोक कर रखने दीजिए। मैं यहाँ जो आयत पढ़ना चाहता हूँ, वह अध्याय आठ की सातवीं और आठवीं आयत है।

अध्याय आठ की सातवीं और आठवीं आयतें अशशूरियों के बारे में यह कहती हैं। इसलिए, देखो, यहोवा उनके विरुद्ध नदी का पानी, जो बहुत बड़ा और बहुत बड़ा है, अशशूर के राजा और उसके सारे वैभव को लेकर आ रहा है। और यह अपने सभी नालों से ऊपर उठेगा और अपने सभी किनारों को पार करेगा, और यह यहूदा में बह जाएगा।

यह बहकर बह जाएगा और गर्दन तक पहुँच जाएगा, और इसके फैले हुए पंख तुम्हारे देश की चौड़ाई को भर देंगे। इसलिए, जब अशशूर की सेना इस्राएल और यहूदा पर आई, तो वे एक प्रचंड बाढ़ की तरह थे जो पूरे देश में फैल गई। भगवान तूफान का देवता बनने जा रहा है।

परमेश्वर उसी तरह अशशूर के विरुद्ध आने वाला है। याद रखें कि अध्याय दो की आयत एक और 10 में निनवे की घेराबंदी के वर्णन में, शहर पर हमला करने वाला दुश्मन तटबंधों और बांधों को छोड़ देता है जिससे शहर में पानी भर जाता है। यह बहुत ही प्रभावी ढंग से यशायाह अध्याय आठ के निर्णय को पलट देता है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह असीरियन राजाओं की बयानबाजी को पलट देता है। असीरियन राजाओं ने भी अक्सर खुद को शक्तिशाली शेरों या शेर के शिकारियों के रूप में चित्रित किया। हमारे पास एक शाही मुहर है जो असीरियन राजा को शेर के साथ हाथापाई करते हुए दिखाती है।

मेसोपोटामिया में अक्सर असीरियन राजाओं की राहतें और दृश्य मिलते हैं। मुझे लगता है कि यह 3000 ईसा पूर्व से ही चला आ रहा है, जहाँ उन्हें शेरों से लड़ते हुए दिखाया गया है। राजा, एक

महान शेर शिकारी होने के नाते, अपने लोगों को किसी भी सेना या किसी भी प्राकृतिक दुश्मन के हमले से बचाने की अपनी क्षमता के बारे में बात करता था, राजा रक्षा करने और बचाने में सक्षम था।

और इसलिए, इस पुस्तक के बिल्कुल केंद्र में, याद रखें कि गिरे हुए शेर के खिलाफ एक ताना है। निनवे का शहर शेर की मांद की तरह रहा है। राजा बाहर गया और उसने अपने शिकार को चीर दिया और उसे वापस निनवे ले आया।

अक्सर, असीरियन के दुश्मनों को शहर में वापस लाया जाता था; उन्हें वहाँ परेड कराया जाता था, और फिर उन्हें यातना देने के बाद मार दिया जाता था। अब, यह सब उलटा होने जा रहा है क्योंकि महान शेर खुद मरने जा रहा है। नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अशुर्नसिरपाल ने कहा था कि मैं एक दहाड़ता हुआ शेर हूँ।

और इसलिए फिर से, यह अशूर की बयानबाजी को पलट देता है और इस तथ्य के बारे में बात करता है कि परमेश्वर सब कुछ ठीक करने जा रहा है। अब, यहाँ यशायाह 5 का वह अंश है जिसे मैं पहले पढ़ना चाहता था। अशूर की सेना शेर की तरह दहाड़ रही है; युवा शेरों की तरह, वे दहाड़ते हैं, गुराते हैं, और अपने शिकार को पकड़ते हैं; वे उसे ले जाते हैं, और कोई भी उसे बचा नहीं सकता।

वे उस दिन उस पर समुद्र की तरह दहाड़ेंगे। और यदि कोई भूमि की ओर देखे, तो अंधकार और संकट को देखे। इसलिए, जब यशायाह लोगों को भयानक न्याय और विनाश का चित्रण करने की कोशिश कर रहा था जो इस्राएल और यहूदा की भूमि पर आने वाला था, तो अशूर एक दहाड़ता हुआ शेर था।

अब, नहूम की पुस्तक में, जब अशूर परमेश्वर के न्याय का पात्र बन जाता है, तो उस दहाड़ते हुए शेर को मौत के घाट उतार दिया जाता है। अशूर की सेना फिर से अपने कटे हुए सिर और क्षत-विक्षत अंगों के लिए जानी जाती है और उन शहरों के सामने लाशों और शवों और सिर को ढेर करने के लिए जानी जाती है, जिन पर उन्होंने विजय प्राप्त की थी, अपने कैदियों की खाल उतारते थे, या उन्हें लकड़ियों पर लटका देते थे। अब लाशों के ढेर और खून-खराबा और हिंसा, अब यह सब होने जा रहा है।

किस्मत पलटने वाली है। और इसलिए, हम अध्याय 3 की आयत 3 में इसके बारे में पढ़ते हैं। घुड़सवार हमला कर रहे हैं, तलवारें और भाले चमका रहे हैं, मारे गए लोगों की भीड़, लाशों के ढेर, अंतहीन लाशें, वे लाशों पर ठोकर खा रहे हैं। इसलिए प्रभु सब कुछ ठीक करने जा रहे हैं।

नहूम की किताब में भाग्य का उलटफेर है। और अंततः जो निनवे ने अन्य राष्ट्रों के साथ किया है, वही उनके साथ होने वाला है। ठीक है।

ईश्वरीय न्याय और ईश्वर द्वारा इसे क्रियान्वित करने तथा इसे कार्यान्वित करने का यह विचार ओबद्याह की पुस्तक में न्याय के संदेश के पीछे भी खड़ा है, जो एदोमियों से निपटता है, जो पूरे

इतिहास में इस्राएल के दुश्मन रहे थे। इसलिए, नहूम का संदेश है कि ईश्वर अशशूर से निपटने जा रहा है। ईश्वर राष्ट्रों के विरुद्ध उनके अत्याचारों के लिए उनका न्याय करने जा रहा है।

ओबद्याह का संदेश यह है कि परमेश्वर एदोमियों को उनके घमंड और बेबीलोन के निर्वासन के समय यरूशलेम शहर पर बेबीलोन के हमले में उनकी भागीदारी के लिए न्याय करने जा रहा है। अब ऐतिहासिक सेटिंग और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बातें। ओबद्याह को 12 की पुस्तक के सामने रखा गया है।

ओबद्याह की पुस्तक के समय, इस बारे में कई अलग-अलग प्रस्ताव हैं। इसे नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व से ही दिनांकित किया गया है। यहाँ समस्या का एक हिस्सा यह है कि हमारे पास इज़राइल और यहूदा और एदोमियों के बीच कई अलग-अलग संघर्ष हैं जो उनके पूरे इतिहास में जारी हैं।

इसे चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक का भी माना गया है, जो वह समय है जब एदोम को अंततः नबातियन अरबों द्वारा उनकी भूमि से बाहर निकाल दिया गया था। इसलिए, यहाँ एक विस्तृत श्रृंखला है। क्या हम इसे नौवीं शताब्दी से चौथी शताब्दी तक की तिथि मानते हैं? कुछ लोगों ने इसे देखा है और इस तथ्य को देखा है कि यह 12 वीं पुस्तक की शुरुआत के करीब है और इसे पहले की तिथि के लिए एक तर्क के रूप में देखा है।

लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ जो चल रहा है वह यह है कि ओबद्याह की पुस्तक को विषयगत कारणों से 12 की पुस्तक में उसके विशेष स्थान पर रखा गया है। आमोस की पुस्तक के अंत में, परमेश्वर द्वारा दाऊद के गिरे हुए बूथ को बहाल करने का उल्लेख है ताकि वे एदोम के बचे हुए लोगों पर कब्ज़ा कर सकें। यह एक लिंक शब्द और एक कैचवर्ड प्रदान करता है जो हमें ओबद्याह के संदेश और प्रभु के वचन और परमेश्वर के संदेश और एदोमियों के पतन के बारे में परमेश्वर के वाणी की ओर ले जाता है।

इसलिए, इसकी तिथि और स्थापना के बारे में प्रश्न हैं। यहाँ तक कि ओबद्याह की पहचान के बारे में भी प्रश्न हैं। नाम का सीधा अर्थ है प्रभु का सेवक।

मेरा मानना है कि पुराने नियम में 13 अलग-अलग व्यक्ति हैं जिन्हें ओबद्याह नाम से जाना जाता है। यह एक आम नाम है। संभवतः इनमें से सबसे प्रसिद्ध अहाब का सलाहकार है जिसका नाम ओबद्याह है।

उसके बारे में दिलचस्प बात यह है कि अहाब इस्राएल का अब तक का सबसे दुष्ट, भयानक, अधर्मी राजा था। फिर भी उसका मुख्य सलाहकार, ओबद्याह, प्रभु का सेवक था जिसने प्रभु के भविष्यवक्ताओं की रक्षा करने में मदद की। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि जिस ओबद्याह के बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं, वह वही ओबद्याह था।

हालाँकि, हम शायद एक ऐसे भविष्यवक्ता को देख रहे हैं जो बेबीलोन के संकट के समय में सेवा करता है। इसलिए, समय और सेटिंग, ओबद्याह 12 की पुस्तक में इन बेबीलोन के भविष्यवक्ताओं में से एक है, भले ही पुस्तक कहाँ स्थित है। एदोमियों ने यहूदा के खिलाफ हमलों में भाग लिया, जबकि नबूकदनेस्सर यहूदा को अधीनता में ला रहा था।

यहाँ जो हो रहा था वह यह था कि एदोमियों ने यहूदा पर बेबीलोन के आक्रमण को देखा, और जब वे यरूशलेम पर विजय प्राप्त कर रहे थे, तो उन्होंने इसे यहूदा से दक्षिण में क्षेत्र छीनने के अवसर के रूप में देखा, जहाँ ये दोनों देश एक दूसरे की सीमा पर थे। एदोम ने यहूदा की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाया और शायद उस क्षेत्र को वापस पाने का अवसर प्राप्त किया जो उन्होंने शुरू में यहूदा के हाथों खो दिया था। पुरातात्विक साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि बेबीलोन के संकट के समय एदोम और यहूदा के बीच इस तरह का संघर्ष चल रहा था।

दक्षिण में एक महत्वपूर्ण किला, अराद शहर से प्राप्त पत्र और शिलालेख तथा एक परत से संकेत मिलता है कि वहाँ मौजूद सैन्य कमांडरों को एहसास हो गया था कि उन्हें एदोमियों से निपटना होगा। इसलिए, एदोमियों ने बेबीलोनियों के साथ मिलकर यहूदा को दण्डित करने में मदद की, लेकिन उन्होंने इसे पुनः प्राप्त करने और क्षेत्र वापस लेने के अवसर के रूप में भी देखा। इसलिए यह ओबद्याह और एदोम और इस्राएल के बीच उनके पूरे इतिहास में चल रहे सभी संघर्षों में है।

यही वह संघर्ष है जिस पर भविष्यवक्ता विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं। तथ्य यह है कि जब बेबीलोन के लोग यरूशलेम का विनाश कर रहे थे, तो एदोम ने इसे अपने फ़ायदे और अपने उद्देश्य को आगे बढ़ाने के अवसर के रूप में इस्तेमाल किया। इसलिए, ओबद्याह की पुस्तक निराश और शायद कुछ अर्थों में निंदक लोगों के लिए लिखी गई है जो निर्वासन में रह रहे हैं, उन्हें फिर से याद दिलाने के लिए कि परमेश्वर अंततः अपने लोगों को बचाने जा रहा है।

भगवान अंततः उन्हें मुक्ति दिलाएंगे। भगवान उनके शत्रुओं से निपटेंगे। उन्हें जो पराजय मिली है, वह इसलिए नहीं है कि इन अन्य राष्ट्रों के देवता उनसे श्रेष्ठ हैं।

परमेश्वर ने इन राष्ट्रों का न्याय करने के लिए उपयोग किया है, लेकिन परमेश्वर उन्हें पराजित भी करेगा और अंततः उन्हें नष्ट भी कर देगा। इसलिए, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में ऐसे कई अंश हैं जो बेबीलोन के आक्रमण और यहूदा पर हमले में एदोम की भागीदारी के बारे में बात करते हैं, जो उनके न्याय का आधार है। मेरा मानना है कि शायद यही वह सेटिंग और पृष्ठभूमि है जिसे हमें ओबद्याह की पुस्तक के लिए भी देखना चाहिए।

ओबद्याह की पुस्तक में कई आयतें हैं जो यिर्मयाह की पुस्तक में एदोम के विरुद्ध वाणी में दिए गए संदेशों से लगभग एक जैसी ही हैं जो यिर्मयाह के अध्याय 49 में पाई जाती हैं। इसलिए, बेबीलोन के संकट के समय एदोम के विरुद्ध यिर्मयाह द्वारा प्रचारित संदेश और उसके बीच एक संबंध है। यह ओबद्याह द्वारा अपनी पुस्तक में प्रचारित संदेश से बहुत निकटता से मिलता-जुलता है।

फिर से, हम ठीक से नहीं जानते कि ऐसा क्यों होता है। क्या यिर्मयाह ने ओबद्याह को उधार लिया है? क्या ओबद्याह ने यिर्मयाह को उधार लिया है? क्या कोई सामान्य परंपरा है? अंततः, हम उन सवालों का जवाब नहीं दे सकते, लेकिन हमें यह समझने की ज़रूरत है कि प्रामाणिक रूप से, ये दोनों पुस्तकें एक-दूसरे की प्रतिध्वनि करती हैं, और वे एक ही संकट के बारे में बात करती हैं। भजन 137 में एदोमियों के खिलाफ़ न्याय के कुछ बेहद कठोर शब्द कहे गए हैं और यहाँ कुछ

बहुत ही भयानक शब्द हैं, लेकिन जब हम इस सेटिंग और इस संघर्ष को थोड़ा बेहतर समझते हैं तो हम समझ जाते हैं कि वे कहाँ से आ रहे हैं।

भजनकार यह कहता है, हे यहोवा, एदोमियों के विरुद्ध यरूशलेम के दिन को स्मरण कर। याद कर जब यरूशलेम बेबीलोनियों के हाथों गिर गया था और एदोमियों ने कैसे इसका आनन्द लिया था, इसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया था, और शायद वे भाड़े के सैनिकों का हिस्सा भी रहे होंगे जिन्हें नबूकदनेस्सर ने शहर की घेराबंदी करने के लिए इस्तेमाल किया था? जैसा कि उन्होंने कहा, इसे उघाड़ दो, इसे इसकी नींव तक उघाड़ दो।

तो यही एदोमियों का अपराध है। ओबद्याह भी इसी पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। और भजन कहता है, हे बेबीलोन की बेटी, जो नाश होने के लिए अभिशप्त है, धन्य होगा वह जो तुझे हमारे साथ किए गए कामों का बदला देगा।

इसलिए, परमेश्वर बेबीलोनियों को उनके किए के लिए न्याय देगा, लेकिन परमेश्वर एदोमियों को भी न्याय देगा क्योंकि उन्होंने भी इसमें भाग लिया था। और इसलिए, श्लोक नौ इन दोनों लोगों से कहता है, धन्य होगा वह जो तुम्हारे बच्चों को लेकर उन्हें चट्टानों पर पटक देगा। ठीक है।

और शायद यह कोई ऐसा श्लोक नहीं है जिसके बारे में हम अपनी प्रार्थनाओं में अक्सर सोचते हैं या जिसकी प्रशंसा करना चाहते हैं, लेकिन परमेश्वर अंततः इन शहरों का उसी प्रकार के सैन्य आक्रमण, उसी प्रकार के अत्याचारों के साथ न्याय करने जा रहा है जो उन्होंने यहूदा के लोगों पर किए हैं। उन पर वे अत्याचार किए जाएँगे। और परमेश्वर के लोग उस समय का इंतज़ार कर रहे हैं जब प्रभु इन चीज़ों को सही करेगा।

और इसलिए फिर से, यहाँ मौजूद हिंसा के बावजूद और इस तथ्य के बावजूद कि यह कैनन का हिस्सा है, यह हमारे लिए असहज है। यह हमारी आधुनिक संवेदनाओं और संवेदनशीलता के बारे में सवाल उठाता है क्योंकि हम हिंसा और युद्ध और उन सभी चीज़ों के बारे में पाठ पढ़ते हैं। उठाने के लिए वैध नैतिक प्रश्न हैं, लेकिन अंततः, यह ईश्वर के न्याय और दुष्टता और बुराई के लिए ईश्वर की सज़ा की याद दिलाता है, उम्मीद है कि किसी बिंदु पर, हिंसा खुद को कायम नहीं रखेगी।

युद्ध यूं ही जारी नहीं रहता। परमेश्वर उन लोगों का न्याय करने के लिए कार्य करता है और हस्तक्षेप करता है जो इस तरह की हिंसा करते हैं ताकि अंततः, एक दिन, शांति का राज्य स्थापित हो। इसलिए, पूरे पुराने नियम में संदर्भ हैं, न केवल एसाव के वंशजों के रूप में एदोमियों और याकूब के वंशजों के रूप में इस्राएलियों के बीच संघर्ष के लंबे इतिहास के लिए, बल्कि एक विशिष्ट संदर्भ है जहां बेबीलोन के संकट के आसपास की घटनाओं में एदोमियों की भागीदारी थी।

ओबद्याह के अलावा हम विलापगीत के चौथे अध्याय, श्लोक 21 और 22 पर भी नज़र डालेंगे। और विलापगीत में एदोमियों का भी ज़िक्र किया जाएगा। हे एदोम की बेटी, तू जो ऊज़ देश में रहती है, आनन्दित और प्रसन्न हो, परन्तु प्याला तेरे पास भी जाएगा।

तू भी मतवाली हो जाएगी और अपने कपड़े उतार देगी। हे सिय्योन की बेटी, तेरे अधर्म का दण्ड पूरा हो चुका है। वह तुझे अब और बंधुआई में नहीं रखेगा।

लेकिन हे एदोम की बेटी, वह तुम्हारे अधर्म का दण्ड देगा, और वह तुम्हारे पाप को उजागर करेगा। इसलिए, अंततः, एदोमियों ने बेबीलोन के विनाश में आनन्द मनाया। वे यहूदा के विनाश में आनन्दित हुए।

उन्होंने इसे अपने लिए क्षेत्र वापस पाने के अवसर के रूप में इस्तेमाल किया। उन्होंने हिंसा में भाग लिया। भगवान ने यह देखा है और अंततः उनके खिलाफ न्याय करेगा।

एदोमियों के विरुद्ध अन्य भविष्यवाणियाँ भी हैं। हम पहले ही यिर्मयाह अध्याय 49 का उल्लेख कर चुके हैं, लेकिन हमारे पास यहजकेल 25, यहजकेल 32, यहजकेल 35 और योएल अध्याय 3 में भी हैं। आमोस इस बारे में बात करता है कि कैसे दाऊद का गिरा हुआ घराना अंततः एदोम के बचे हुए लोगों पर कब्जा करेगा। इसलिए, यह भविष्यवाणी साहित्य में एक आवर्ती विषय है।

अब, जब हम ओबद्याह की पुस्तक की बारीकियों को देखते हैं, तो दो विशिष्ट कारण सामने आते हैं कि क्यों परमेश्वर इन लोगों के विरुद्ध न्याय करने जा रहा है। हम पहले ही इस पर चर्चा कर चुके हैं। लेकिन पहला विशिष्ट कारण, और मुझे लगता है कि पुस्तक के पहले भाग में श्लोक एक से नौ में, परमेश्वर एदोमियों के विरुद्ध उनके अत्यधिक घमंड के कारण न्याय करने जा रहा है।

परमेश्वर एदोमियों के विरुद्ध उनके अत्यधिक घमंड के कारण न्याय करने जा रहा है। इसलिए, हमने सवाल पूछा, अच्छा, यह एक छोटा राष्ट्र था। वे इतने घमंडी और अभिमानी लोग क्यों थे? अच्छा, वे घमंडी थे क्योंकि उनका मानना था कि उनकी भूमि की भौगोलिक विशेषताएँ उन्हें दुश्मन के हमले के लिए अजेय बनाती हैं।

यह एक पहाड़ी इलाका था जहाँ उनका मानना था कि उनके पास अपने दुश्मनों के खिलाफ़ एक प्राकृतिक किला और किला था। एदोम नाम, जिसका अर्थ है कुछ ऐसा जो लाल है और लालिमा से संबंधित है, वहाँ मौजूद चट्टानों और पहाड़ों की लालिमा से संबंधित है। लेकिन इन चट्टानों और इन पहाड़ों की वजह से, एदोमियों का मानना था कि वे वहाँ छिप सकते हैं और वे दुश्मन के हमले से अजेय हैं।

इसलिए, यह पद तीन में कहता है, तुम्हारे हृदय के अभिमान ने तुम्हें धोखा दिया है, तुम जो चट्टानों की दरारों में रहते हो। यही उनके अभिमान का स्रोत था। तुम जो अपने ऊँचे घर में रहते हो और अपने मन में कहते हो, कौन मुझे ज़मीन पर उतारेगा? चाहे तुम उकाब की तरह ऊँचे उड़ते हो, चाहे तुम्हारा घोंसला तारों के बीच बना हो, वहाँ से, प्रभु कहते हैं, मैं तुम्हें नीचे उतारूँगा।

उनके पहाड़ और उनकी चट्टानें और उनकी चट्टानें और उनकी चट्टानें और उनके किले उनकी रक्षा नहीं करेंगे क्योंकि ये चीज़ें प्रभु को उन्हें गिराने से नहीं रोक पाएंगी। बेबीलोन की सेना वहाँ अतिक्रमण करने जा रही है क्योंकि परमेश्वर उन्हें ऐसा करने में सक्षम बनाएगा। और ओबद्याह की पुस्तक के शुरुआती छंदों में जो कुछ आप देखते हैं, जैसा कि यह एदोम के घमंड के न्याय के

बारे में बात करता है, वह यह है कि यहाँ एक चिआस्टिक संरचना है जहाँ पुस्तक प्रभु के बारे में बात करके शुरू होती है जो एदोम पर हमला करता है, छंद दो से चार।

फिर, एक दुश्मन सेना है जो एदोम पर हमला करती है, श्लोक पांच से सात तक। लेकिन फिर हम श्लोक आठ और नौ में वापस आते हैं कि यहोवा ही है जो उनके खिलाफ यह हमला और यह हमला करता है। इसलिए, श्लोक आठ में, यहोवा कहता है, क्या मैं उस दिन एदोम से बुद्धिमानों को और एसाव पर्वत से समझ को नष्ट नहीं करूँगा, यहोवा की यह वाणी है?

हे तेमान, तेरे पराक्रमी लोग घबरा जाएँगे, इसलिए एसाव पर्वत का हर आदमी मेरे वध से नाश हो जाएगा। यह चिआस्टिक संरचना क्या करती है, यह पाँच से सात आयतों में सेना के आक्रमण को इस कथन के साथ समाप्त करती है कि परमेश्वर ही वह है जो अंततः उन्हें नीचे गिराने वाला है। तो, यह परमेश्वर और एदोमियों के बीच संघर्ष का अंत होने जा रहा है।

अंततः, यह उस संघर्ष का समाधान होगा जो याकूब और एसाव के बीच शुरू से ही चला आ रहा है। याद रखें, उत्पत्ति की पुस्तक में याकूब और एसाव के बीच संघर्ष था। ये दोनों भाई एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी बनने जा रहे हैं।

याकूब अपने भाई से जन्मसिद्ध अधिकार छीनने जा रहा है, और अंततः, वह धन्य होने जा रहा है। जब ऐसा पहली बार होता है, तो एसाव अपने भाई के किए के लिए उसे मारने का संकल्प लेता है। फिर, अंततः, वे एक दूसरे के साथ शांति स्थापित करते हैं।

इसलिए, भगवान द्वारा एदोमियों पर न्याय करने का एक कारण यह भी है कि उन्होंने एसाव की प्रतिज्ञा को पूरा नहीं किया है जब वह अपने भाई याकूब और इस्राएलियों के साथ शांति से रहने के लिए सहमत हुआ था। इसलिए, उनके पूरे इतिहास में, राजशाही के समय में, लगातार संघर्ष होता रहा है। दाऊद एदोमियों को अपने अधीन कर लेगा, और एदोमी स्वतंत्र होने का प्रयास करेंगे।

हम देखते हैं कि एदोमियों ने बेबीलोन संकट के समय तक लगातार इस्राएल और यहूदा के लोगों के खिलाफ हमले और हत्या या हिंसा की। परमेश्वर अंततः एदोम को उनके घमंड के कारण नीचे गिराने जा रहा है। लेकिन फिर हम पहले ही जिस बारे में बात कर चुके हैं वह यह है कि आयत 10 से 14 में, परमेश्वर इस्राएल के साथ उनके व्यवहार के कारण एदोमियों को नीचे गिराने जा रहा है।

पद 10: तूने अपने भाई याकूब पर जो अत्याचार किया है, उसके कारण तुझे लज्जा का आवरण लगेगा, और तू सदा के लिए नाश हो जाएगा। उस दिन तू अलग खड़ा रहा। जिस दिन परदेशियों ने उसका धन छीन लिया और परदेशियों ने उसके फाटक में प्रवेश करके यरूशलेम के लिये चिट्ठी डाली, उस दिन तू भी उनमें से एक था।

तुमने यरूशलेम की लूटपाट और उसके खज़ानों को लूटने में हिस्सा लिया। और यहोवा के दिन, तुम उन मानव सेनाओं में से एक थे जिन्होंने यहूदा पर हमला किया या जो इसमें शामिल थे। लेकिन अपने भाई के दुर्भाग्य के दिन पर उसके दिन पर खुश मत हो।

यहूदा के लोगों के विनाश के दिन उनके कारण आनन्दित न हो; उनके संकट के दिन घमंड न करो; मेरी प्रजा के संकट के दिन उनके फाटक में प्रवेश न करो।

श्लोक 13, और वहाँ विपत्ति के लिए शब्द एदोम है, जो स्पष्ट रूप से, मुझे लगता है, एदोम शब्द पर एक नाटक है। यहाँ दिन शब्द को बार-बार दोहराया गया है। इस तथ्य पर जोर देने के लिए, यहूदा ने बेबीलोन के आक्रमण के साथ प्रभु के दिन का अनुभव किया।

उस समय यहूदा के साथ जो कुछ हुआ, उसमें एदोम भी एक सहभागी भागीदार था। और अंततः प्रभु का दिन एदोमियों के विरुद्ध आने वाला है। और यही होता है जैसा कि हम पद 1 से 14 में न्याय के संदेश को देखते हैं।

हमारे पास न्याय के कारण हैं, उनका अत्यधिक गर्व, उनकी भौगोलिक स्थिति पर उनका भरोसा। फिर दूसरी बात, उनका आक्रमण और यहूदा के विनाश में उनकी भागीदारी। यहूदा का दिन अब एदोमियों के विरुद्ध यहोवा का दिन बन जाएगा।

और इसलिए, ओबद्याह की पुस्तक का अंतिम भाग प्रभु के दिन के बारे में एक संदेश है जो सभी राष्ट्रों के विरुद्ध आने वाला है। और यहाँ पद 15 में क्या कहा गया है, क्योंकि प्रभु का दिन सभी राष्ट्रों पर निकट है।

जैसा तूने किया है, वैसा ही तुझे भुगतना पड़ेगा, और तेरा कर्म तेरे ही सिर पर पड़ेगा। अपराध के अनुसार ही दण्ड मिलता है। ईश्वर इस सबमें न्याय करता है।

क्योंकि जैसे तुमने मेरे पवित्र पर्वत पर पीया है, वैसे ही यरूशलेम के पतन में उनकी भागीदारी भी है। इसलिए, सभी राष्ट्र लगातार पीते रहेंगे। वे पीते रहेंगे और निगलते रहेंगे, और ऐसा लगेगा जैसे वे कभी थे ही नहीं।

इसलिए, जिन राष्ट्रों ने इसमें भाग लिया है, वे नष्ट हो जाएँगे, लेकिन परमेश्वर कहता है, मैं अपने लोगों को पुनःस्थापित करूँगा। मैं सिथ्योन पर्वत को पुनःस्थापित करूँगा। इस्राएल ने प्रभु के दिन को पार किया।

यहूदा ने प्रभु के दिन को पार किया और अंततः उसे मुक्ति मिली। एदोम और ये अन्य राष्ट्र जो परमेश्वर के शत्रु हैं, अंतिम न्याय से गुजरेंगे, और कोई पुनर्स्थापना नहीं होगी। इसलिए, यहूदा पर आया प्रभु का दिन अब एदोमियों पर आने वाला है।

ओबद्याह जिस तरह से इस विचार का उपयोग करता है, प्रभु के दिन की अवधारणा बहुत हद तक वैसी ही है जैसी हम अन्य भविष्यवाणी पुस्तकों में देखते हैं। ऐसा लगता है जैसे कि भविष्यवाणी का दर्शन निकट और दूर की घटनाओं को एक साथ जोड़ता है। सभी राष्ट्रों पर एक न्याय आने वाला है और एदोमी लोग इसका हिस्सा बनने जा रहे हैं।

जैसे-जैसे बेबीलोन अपने सैन्य उद्देश्यों और लक्ष्यों को पूरा करता है, अंततः एदोम भी इसमें बह जाएगा। लेकिन ऐसा लगता है कि यहाँ भविष्यवाणी का दर्शन केवल उन चीजों से परे है जो तत्काल भविष्य में होने वाली हैं। यहूदा पर और फिर अंततः एदोमियों और अन्य लोगों पर बेबीलोनियों के हाथों जो न्याय आया, वह हमें अंतिम न्याय की याद दिलाता है जिसमें सभी राष्ट्र और सभी लोग शामिल होंगे।

फिर, यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को बहाल करने और सिथ्योन में अपने राज्य को फिर से स्थापित करने की प्रस्तावना बन जाएगी। यहाँ वादा है। लेकिन सिथ्योन पर्वत पर, ऐसे लोग होंगे जो बच जाएँगे, और यह पवित्र होगा, और याकूब का घराना अपनी संपत्ति का अधिकारी होगा।

याकूब का घराना आग की तरह होगा और यूसुफ का घराना ज्वाला की तरह। इसलिए, एदोम का विनाश और इस्राएल की पुनर्स्थापना होने जा रही है। भविष्यवक्ता, फिर से, पहाड़ों पर देखने वाले उस व्यक्ति की तरह है।

वह एक पहाड़ देखता है जो एदोमियों के पतन और उनके विरुद्ध परमेश्वर द्वारा लाए जाने वाले न्याय के निकट है। वह उससे आगे दूर के भविष्य में इस्राएल की अंतिम बहाली और परमेश्वर के सभी शत्रुओं के न्याय को देखने के लिए देखता है। यह इस भविष्यसूचक दर्शन का हिस्सा है।

सवाल यह है कि, हमारे पास यहाँ एक वादा है कि परमेश्वर न्याय करने जा रहा है। हमारे पास एक वचन है जो मुझे लगता है कि निराश लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए दिया गया है, यहूदा के उन निंदक लोगों को याद दिलाने के लिए जो निर्वासन में रह रहे हैं कि परमेश्वर आपको भूला नहीं है। वह चीजों को सही करने जा रहा है।

सवाल यह है कि क्या यह वास्तव में कभी हुआ था? क्या यह भविष्यवाणी पूरी हुई? यहाँ एक बात है जो हम बारह की पुस्तक में पाई जाने वाली विभिन्न पुस्तकों को एक साथ जोड़कर देखते हैं। एदोम के न्याय की भविष्यवाणी ओबद्याह के अध्याय एक और ओबद्याह की पुस्तक में की गई है। इस भविष्यवाणी की पूर्ति का उल्लेख लघु भविष्यवक्ताओं की अंतिम पुस्तक, मलाकी अध्याय एक, श्लोक दो से पाँच में किया गया है।

यह परमेश्वर और उसके लोगों के बीच विवाद का हिस्सा है। मलाकी की पुस्तक के अंत में, इस्राएल के इन सभी न्यायदंडों, असीरियन संकट, बेबीलोन संकट और निर्वासन के बाद की अवधि के अभाव से गुज़रने के बाद, प्रभु अपने लोगों से कहता है, मैंने तुमसे प्रेम किया है। लेकिन वे उसे जवाब देते हैं, तुमने हमसे कैसे प्रेम किया है? परमेश्वर, तुम हमसे प्रेम करने का दावा करते हो।

आप हमसे कैसे प्यार करते हैं? और इसलिए, प्रभु उन्हें जवाब देने जा रहे हैं और इसका उत्तर देंगे। वह कहते हैं, क्या एसाव याकूब का भाई नहीं है, यहोवा की यह वाणी है, फिर भी मैंने याकूब से प्रेम किया है, लेकिन एसाव से घृणा की है। मैंने उसके पहाड़ी देश को उजाड़ दिया है और उसकी विरासत को रेगिस्तान के गीदड़ों के हवाले कर दिया है।

यदि एदोम कहता है कि हम टूट गए हैं, परन्तु हम खण्डहरों को फिर से बनाएंगे, तो सेनाओं का यहोवा कहता है, वे बना सकते हैं, परन्तु मैं ढा दूंगा। और वे दुष्ट देश कहलाएंगे और वे लोग जिन पर यहोवा सदा क्रोधित रहता है। तुम अपनी आंखें यह देखोगे, और तुम कहोगे, इस्राएल की सीमा से परे यहोवा महान है।

इस्राएल के लोग कहते हैं, हे परमेश्वर, तू हमसे प्रेम करने का दावा करता है। हम उसका प्रमाण देखना चाहते हैं। तूने हमें अनेक न्यायदण्डों से मारा है।

हम कैसे जान सकते हैं कि आप हमसे प्यार करते हैं? और प्रभु कहते हैं, ठीक है, मैं चाहता हूँ कि आप जो कुछ आपके साथ हुआ है उसकी तुलना एदोमियों के साथ होने वाली घटना से करें। एदोमियों को नष्ट कर दिया गया है। उनकी भूमि पर आक्रमण किया गया है, और वे फिर से नहीं बनने जा रहे हैं।

वे बहाल नहीं होने जा रहे हैं। और इसलिए, इस्राएल के भविष्य की आशा इस तथ्य के विपरीत है कि एदोम का न्याय अंतिम था, यह फिर से इस तथ्य का एक और प्रदर्शन है कि प्रभु ने इस्राएल और याकूब से प्रेम किया और उन्हें चुना था, लेकिन अंततः एसाव और एदोमियों को अस्वीकार कर दिया। इतिहास इस बात की पुष्टि करने जा रहा है कि परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम करता था।

लेकिन मलाकी हमारे लिए यह प्रमाणित कर रहा है कि ओबद्याह में जो वादा और भविष्यवाणी दी गई है, वह सच हुई और यह भविष्यवाणी पूरी हुई। ऐतिहासिक रूप से, ऐसा लगता है कि यह दो चरणों में हुआ। उस समय के कुछ समय बाद जब एदोमियों ने यरूशलेम पर बेबीलोन के आक्रमण में भाग लिया था, विडंबना यह है कि बेबीलोनियों ने एदोमियों के खिलाफ अभियान चलाया था।

और इसलिए, यरूशलेम के साथ जो कुछ हुआ था उसके कुछ समय बाद, एदोम को भी वही अनुभव होने वाला है। केनेथ होगलैंड, ओबद्याह की पुस्तक पर अपनी टिप्पणी में, यह कहने जा रहे हैं: एदोम का विनाश यरूशलेम के विनाश से बहुत पीछे नहीं था। बिखरे हुए साक्ष्यों, साहित्यिक और पुरातात्विक दोनों से, यह निष्कर्ष निकालना संभव है कि नबोनिडस ने छठी शताब्दी के मध्य में पश्चिम के खिलाफ अभियान के दौरान एदोम पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया।

और इसलिए, बेबीलोन के इतिहास, 553 ईसा पूर्व में राजा नबोनिडस के इतिहास से पुष्टि होती है कि उस वर्ष, यरूशलेम के पतन के समय से 40 साल से भी कम समय बाद, बेबीलोनियों ने एदोमियों के खिलाफ एक अभियान चलाया था। इसलिए, एदोमियों ने अपने गर्व में, यरूशलेम के बेबीलोन के विनाश में भाग लिया था। उन्होंने इसका जश्न मनाया था।

उन्होंने इसे अपनी अवसरवादी इच्छाओं के लिए इस्तेमाल किया था। वे यह नहीं समझ पाए कि जो कुछ यहूदा के साथ हुआ था, वही बहुत निकट भविष्य में उनके साथ भी होने वाला था। मुझे लगता है कि इसकी दूसरी पूर्ति निर्वासन के बाद के काल में हुई।

शायद मलाकी यहाँ इसी बारे में बात कर रहा है। पाँचवीं सदी में, एदोमियों को अंततः नाबातियनों के आक्रमण के कारण उनके देश से बाहर निकाल दिया गया। अंततः नाबातियन इस विशेष देश में एदोमियों की जगह लेने जा रहे हैं।

अगर आपने पेट्रा शहर की तस्वीरें देखी हैं या कभी वहाँ जाने का मौका मिला है, तो यह अविश्वसनीय शहर और इमारतें सीधे चट्टानों में बनी हैं। पेट्रा का निर्माण नाबातियन लोगों ने किया था, जो अंततः उस देश में रहने वाले एदोमियों की जगह लेने वाले लोग थे। अब बाइबिल के इतिहास के साथ एक और संबंध यह है कि नए नियम में, हेरोदेस का उल्लेख किया गया है और हेरोदेस को एक एदोमी के रूप में जाना जाता है।

तो, चाहे इसका मतलब यह हो कि वह वास्तव में एदोमियों का शारीरिक वंशज है या फिर वह सिर्फ इस क्षेत्र में रहता था, वह अंततः उन लोगों से जुड़ा हुआ है जिनके बारे में हम ओबद्याह की पुस्तक में बात कर रहे हैं और वे लोग जिन्होंने मलाकी की पुस्तक में इस न्याय का अनुभव किया। अंततः, कई मायनों में, वह परम एदोमियों की अभिव्यक्ति है। वे शत्रुतापूर्ण हैं।

वे एदोमियों के खिलाफ हत्या और हिंसा में शामिल हैं। वे भाईचारे की वाचा को धोखा देते हैं। हेरोदेस अपने जीवन में इसका उदाहरण देता है, और वह इस इतिहास से भी जुड़ा हुआ है।

ऐतिहासिक रूप से, यहूदा पर बेबीलोन के आक्रमण में एदोमियों की भागीदारी और यहूदा की भूमि के विरुद्ध बेबीलोनियों द्वारा किए गए हमलों के बारे में एक और संदर्भ है जो काफी दिलचस्प है। यिर्मयाह की पुस्तक के अध्याय 27 में, हमारे पास एक अंश है जो इस तथ्य के बारे में बात करता है कि एदोमियों और एदोम और यहूदा के नेता बेबीलोनियों के विरुद्ध गठबंधन बनाने के बारे में बातचीत में शामिल थे। अध्याय 27 में हम पाते हैं कि एदोम, मोआब, अम्मोन, सोर और सिडोन से दूतों का एक समूह, सिदकिय्याह और उसके सलाहकारों और उसके सैन्य लोगों से परामर्श करने के लिए यरूशलेम आता है।

वे सैन्य गठबंधन की संभावना पर चर्चा कर रहे हैं। यरूशलेम में वह सम्मेलन और बैठक 593 ईसा पूर्व में हुई थी। जब यह बैठक हो रही थी, यिर्मयाह ने इन दूतों को, इन विभिन्न देशों के राजदूतों को चेतावनी दी कि बेबीलोनियों के खिलाफ किसी भी प्रकार का गठबंधन, किसी भी प्रकार का गठबंधन अंततः सफल नहीं होने वाला था।

वह अपने गले में जूआ पहनता है और उसे पूरे शहर में ले जाता है, इस तथ्य के बारे में बात करते हुए कि परमेश्वर इन सभी राष्ट्रों को बेबीलोन के राजा के अधीन करने जा रहा है। इसलिए, 593 ईसा पूर्व में, एदोमियों और यहूदा के नेता सहयोगी बनने की संभावना के बारे में बात कर रहे थे। जब 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया, तो एदोमियों के दुश्मन बन गए, और वे बेबीलोनियों के साथ मिल गए।

यह कुछ हद तक पुराने नियम में एदोमियों और इस्राएलियों के बीच के पूरे इतिहास को दर्शाता है। अब हमने इस दिलचस्प संदेश, दिलचस्प ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखा है। हमने दो न्यायदंडों के बारे में बात की है जिन्हें परमेश्वर इतिहास में लागू करता है।

नहूम की पुस्तक में, परमेश्वर ने नीनवे के लोगों का न्याय करने और उन्हें नष्ट करने के लिए बेबीलोनियों का इस्तेमाल किया। ओबद्याह की पुस्तक में, परमेश्वर ने एदोमियों पर न्याय करने के लिए बेबीलोनियों और फिर नबातियों का इस्तेमाल किया। लेकिन हम जो सवाल पूछते हैं, और कभी-कभी यह वही सवाल होता है जिससे आपको पुराने नियम को पढ़ाते समय निपटना पड़ता है, वह यह है कि कौन परवाह करता है? यह बहुत समय पहले हुआ था।

हमें इस बारे में क्यों चिंतित होना चाहिए? या इनमें से किसी का हमारे लिए क्या प्रासंगिकता या महत्व है, जब हम आज हमारे साथ या राष्ट्रों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के बारे में सोचते हैं? मुझे लगता है कि नहूम की पुस्तक और ओबद्याह की पुस्तक में इतिहास के पाठ से कहीं अधिक है। इन पुस्तकों से जो स्थायी धार्मिक संदेश निकलता है, वह यह है कि जिस तरह से परमेश्वर ने नीनवे का न्याय किया, और जिस तरह से परमेश्वर ने अतीत में एदोम का न्याय किया, और जिस तरह से परमेश्वर ने अतीत में अन्य राष्ट्रों का न्याय किया है, यह इतिहास में परमेश्वर की निरंतर भागीदारी की पुष्टि है। यह राष्ट्रों के अंतिम न्याय की याद दिलाता है जो प्रभु के अंतिम दिन में होगा।

तो, यह सिर्फ ऐतिहासिक रूप से घटित होने वाली घटना नहीं है। यह उन चीजों का पैटर्न है जो भविष्य में भी जारी रहेंगी। परमेश्वर अभी भी राष्ट्रों पर प्रभुता रखता है।

परमेश्वर अभी भी उन्हें नूह की वाचा के उल्लंघन और हिंसा और रक्तपात तथा इस तरह की सभी चीजों को अंजाम देने के लिए जवाबदेह ठहराता है। इसलिए, राष्ट्रों के लिए एक स्थायी संदेश है। जब भी कोई राष्ट्र अशूर के पाप को जारी रखता है, तो परमेश्वर उन्हें जवाबदेह ठहराता है।

वह या तो इतिहास में या फिर भविष्य में उनका न्याय करेगा। जब राष्ट्र एदोमियों जैसे लोगों द्वारा किए गए अपराधों को अंजाम देते हैं, तो परमेश्वर उन्हें जवाबदेह ठहराता है। परमेश्वर अपने शत्रुओं और अपने लोगों पर अत्याचार करने वालों का न्याय करेगा।

तो, इससे एक स्थायी संदेश निकलता है। मुझे लगता है कि कुछ अंश हैं जो स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करते हैं कि हम केवल एक ऐतिहासिक संदेश से कहीं अधिक देख रहे हैं। नहूम अध्याय 3, श्लोक 4 से 7। मैं वापस जाकर इसका विवरण पढ़ना चाहता हूँ।

नीनवे का विनाश एक अशिष्ट वेश्या के रूप में हुआ क्योंकि उसने अपनी शक्ति और धन के कारण राष्ट्रों को अपने साथ गठबंधन में फंसाया और फिर अपने उद्देश्यों के लिए उसका उपयोग किया। नीनवे पर जो हाथ है, वह यह कहती है, वेश्या के अनगिनत व्यभिचारों के कारण, उसके सुंदर और घातक आकर्षण, जो अपने व्यभिचार से राष्ट्रों को और अपने आकर्षण से लोगों को धोखा देती है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, और मैं तेरे वस्त्र को तेरे चेहरे पर उठाऊँगा, और मैं राष्ट्रों को तेरी नग्नता और लज्जा दिखाऊँगा। यह महिलाओं के खिलाफ हिंसा का समर्थन नहीं कर रहा है, लेकिन यह यह कहने के लिए एक बहुत शक्तिशाली रूपक का उपयोग कर रहा है कि यह वेश्या जिसने अपनी चालाकी और अपने आकर्षण का उपयोग करके इन अन्य राष्ट्रों पर अत्याचार किया और उन्हें गुलाम बनाया है, अंततः अपने अपराधों के लिए दंड प्राप्त करेगी।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 18 में, जब हम अंतिम साम्राज्य और मसीह विरोधी के साम्राज्य या अंतिम दिनों के अंतिम साम्राज्य या पहली सदी में प्रतिबिंबित साम्राज्य, रोमन साम्राज्य के न्याय के बारे में परमेश्वर के अंतिम निर्णय को देखते हैं, और यह कैसे परमेश्वर के शत्रुओं को दर्शाता है जो अंत तक जारी रहेंगे। प्रकाशितवाक्य 18 में बेबीलोन के पतन का वर्णन इस प्रकार किया गया है। गिर गया, गिर गया महान बेबीलोन।

वह दुष्टात्माओं का निवास स्थान और हर अशुद्ध आत्मा का अड्डा बन गई है। पद तीन: क्योंकि सभी राष्ट्रों ने उसकी अनैतिकता की वासना की मदिरा पी ली है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ अनैतिकता की है, और पृथ्वी के व्यापारी उसके विलासी जीवन की शक्ति से अमीर हो गए हैं। वहाँ वेश्या की कल्पना मुख्य रूप से कामुकता के बारे में बात नहीं कर रही है।

फिर से, यह एक महान साम्राज्य के बारे में बात कर रहा है जो अपनी शक्ति और धन का उपयोग इन अन्य राष्ट्रों को प्रेरित करने और लुभाने के बहाने के रूप में करता है और फिर उन पर अत्याचार करता है और उन्हें अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करता है। नहूम अध्याय तीन में ऐतिहासिक रूप से निनवे का न्याय बिल्कुल महान बेबीलोन के न्याय के समान है जो भविष्य में होगा। यहाँ परमेश्वर द्वारा ऐतिहासिक रूप से इन दुष्ट, बुरे और अत्याचारी साम्राज्यों का न्याय करने का एक पैटर्न है।

परमेश्वर ने अशूर साम्राज्य का न्याय किया। परमेश्वर ने अंततः बेबीलोन साम्राज्य का न्याय किया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इस साम्राज्य के बारे में बात करने के लिए बेबीलोन शब्द का उपयोग करने का कारण यह है कि रोम, कई मायनों में, बेबीलोन साम्राज्य का ही एक नया रूप था।

वहाँ पर टाइपोलॉजी ठीक उसी तरह है, जैसे कि भगवान ने पुराने नियम में इस हिंसक और दुष्ट साम्राज्य को गिरा दिया; चाहे वह असीरिया हो या बेबीलोन, भगवान रोम के साथ भी ऐसा ही करने जा रहे हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पैटर्न निकट और तत्काल भविष्य से परे दिखता है और जॉन के दिनों में क्या चल रहा था। यह भविष्य के समय और एक और साम्राज्य और मनुष्य के इस साम्राज्य की निरंतरता की ओर देखता है जो भविष्य में भगवान के विरोध में है और कहता है, भगवान उस साम्राज्य का न्याय करने जा रहे हैं, और भगवान भविष्य में राष्ट्रों का न्याय करने जा रहे हैं उसी कारण से जिस कारण से उन्होंने अतीत में उनका न्याय किया है।

इसलिए, यहाँ एक पैटर्न स्थापित किया गया है जो अंत तक अपना काम करेगा। रहस्योद्घाटन 18 में अंतिम साम्राज्य, चाहे वह रोम हो या दूर के भविष्य में कोई साम्राज्य, हमें यह सुझाव नहीं दे रहा है कि मसीह विरोधी अपना मुख्यालय बेबीलोन के डाउनटाउन या बगदाद के डाउनटाउन में स्थापित करने जा रहा है, बल्कि यह बेबीलोन को एक छवि और एक पैटर्न के रूप में उपयोग कर रहा है जो पूरे इतिहास में जारी रहने वाला है। मेरा मानना है कि जब हम मीका के अध्याय 5, श्लोक 1 से 6 को देखते हैं, तो हम वही बात देखते हैं।

एक राजा होगा जो दाऊद की वंशावली से आएगा और वह दाऊद को पुनर्स्थापित करेगा और वह उस असीरियन को हराएगा जो देश में आएगा। जब परमेश्वर अंततः यीशु के दूसरे आगमन

पर अपने शत्रुओं को हराने के लिए मसीहा का उपयोग करता है, तो वहाँ शत्रु को असीरियन के रूप में वर्णित किया जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि असीरियन का कोई बड़ा पुनरुद्धार या पुनरुत्थान होने वाला है।

इसका सीधा सा मतलब है कि साम्राज्य और राष्ट्र तथा परमेश्वर के शत्रु जिन्हें परमेश्वर भविष्य में यीशु के दूसरे आगमन पर गिराएगा, वे उसी तरह के साम्राज्य और उसी तरह के लोग होंगे जिनसे परमेश्वर ने बेबीलोन का न्याय करते समय निपटा था। मेरा मानना है कि राष्ट्रों का इस तरह का प्रतिनिधि उपयोग पुराने नियम में भी परिलक्षित होता है जब हम एदोमियों के न्याय को देखते हैं। भविष्यवाणी के माध्यम से अपना काम करते समय आपको जो पैटर्न मिलते हैं उनमें से एक यह है कि यह शांति, समृद्धि और आशीर्वाद का एक राज्य है जिसे परमेश्वर इन लोगों के लिए लाएगा।

वे अंश अक्सर उन अंशों के साथ स्पष्ट रूप से जुड़े होते हैं जो एदोमियों के न्याय और विनाश के बारे में बात करते हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह अध्याय 34 में, भविष्य में इस्राएल के लिए परमेश्वर का यह आशीर्वाद, यशायाह अध्याय 35 में, एदोम के न्याय के बाद आता है। यहजेकेल की पुस्तक में भी आपको वही बात देखने को मिलती है।

जब आप अध्याय 36 और 37 के बारे में बात कर रहे हैं और परमेश्वर ने इस्राएल को सूखी हड्डियों में जीवित किया और यह सब, और परमेश्वर ने एक नई वाचा बनाई और इस्राएल के लोगों को एक नया हृदय दिया, तो उस वादे से ठीक पहले एदोमियों के न्याय से निपटने वाला एक कथन आता है। तो, यह क्या कह रहा है? फिर से, यह जरूरी नहीं है कि एदोमियों को ही वह महान शक्ति बनना है जिसे परमेश्वर को हराना है और जिसे मसीहा अपने दूसरे आगमन पर हरमगिदोन की लड़ाई में घोड़े पर सवार होकर नीचे लाएगा, लेकिन बस यह तथ्य कि एदोमियों का न्याय अंततः उस न्याय का प्रतिनिधित्व करता है जिसे परमेश्वर सभी लोगों के खिलाफ लाएगा। यशायाह अध्याय 63 ऐसा करने वाला प्रोटोटाइपिक मार्ग हो सकता है।

यशायाह बोस्राह से, एदोम की भूमि से एक आदमी को आते हुए देखता है, और वह शराब के दागों से सना हुआ है। यह कहता है कि वह शराब के कुंड में रहा है, शराब के कुंड में अंगूरों को रौंद रहा है। लेकिन जैसे ही यह आकृति, यह व्यक्ति उसके करीब आता है, हम महसूस करते हैं कि यह आकृति यहोवा है।

और यहोवा एदोम से योद्धा के रूप में लौट रहा है। और उसके वस्त्र पर दाखमधु के दाग नहीं हैं, बल्कि उसके शत्रु का खून है। परमेश्वर का न्याय जो परमेश्वर शत्रु राष्ट्रों के विरुद्ध करेगा, उसकी तुलना इन राष्ट्रों को दाखमधु के कुण्ड में रौंदने से की गई है।

एदोम इसका एक प्रतिनिधि उदाहरण है। और जब हम इसे देखते हैं और कहते हैं, हे भगवान, मुझे ईश्वर की वह छवि पसंद नहीं है। मुझे नहीं लगता कि इस तरह का ईश्वर नए नियम के ईश्वर के साथ कैसे मेल खाता है।

मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि पुराने नियम का परमेश्वर उस परमेश्वर के साथ कैसे मेल खाता है जो यीशु का पिता और यीशु का प्रेम है। खैर, यीशु के दूसरे आगमन पर लौटने पर हमें जो छवि दी

गई है, वह सीधे यशायाह 63 से ली गई है। और अब यहोवा वह नहीं है जो शराब के दागों से सने अपने वस्त्र के साथ बोसा से लौटता है, बल्कि यह यीशु स्वयं है जो राष्ट्रों के अंतिम निर्णय को पूरा करने और अपने न्याय में उन्हें नष्ट करने के लिए एक योद्धा पर सवार होकर निकलता है।

और इसलिए, ओबद्याह की पुस्तक में एदोम का न्याय, नहूम की पुस्तक में नीनवे का न्याय हमारे लिए केवल एक ऐतिहासिक वस्तु पाठ नहीं है। यह अंतिम न्याय की याद दिलाता है। पूरे इतिहास में परमेश्वर के सभी न्याय हमें उस महान न्याय की याद दिलाते हैं जो अभी भी आने वाला है।

भविष्यवक्ता हमें याद दिलाते हैं कि राष्ट्रों को नूह की वाचा के प्रति उसी तरह उत्तरदायी ठहराया जाता है जिस तरह से परमेश्वर ने मसीह के समय से पहले 8वीं शताब्दी, 6वीं शताब्दी या 5वीं शताब्दी में राष्ट्रों का न्याय किया था। परमेश्वर आज भी राष्ट्रों का न्याय करता है और उन्हें नूह की वाचा के आदेशों को पूरा करने के लिए उत्तरदायी ठहराता है। एक अंतिम मुद्दा और उचित विचार जो मैं यहाँ उठाना चाहता हूँ वह यह है कि भविष्यवाणी के लोकप्रिय उपचार अक्सर यह सवाल उठाते हैं कि क्या बाइबिल की भविष्यवाणी में कभी संयुक्त राज्य अमेरिका का उल्लेख किया गया है? और कभी-कभी हमारे पास द हार्बिंगर जैसी कोई लोकप्रिय पुस्तक होगी जो यशायाह 9 जैसे अंश को लेने की कोशिश करेगी और कहेगी, यह अमेरिका के न्याय की एक विशिष्ट भविष्यवाणी है।

भविष्यवाणी में संयुक्त राज्य अमेरिका से संबंधित कोई स्पष्ट अंश नहीं हैं, लेकिन ये अंश संयुक्त राज्य अमेरिका पर उसी तरह लागू होते हैं जैसे वे हर राष्ट्र पर लागू होते हैं। और इसलिए हम अक्सर पुराने नियम में भविष्यवाणी के साथ एक भयानक व्याख्यात्मक गलती करते हैं। हम अक्सर, जब हम भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं या उन्हें उपदेश देते हुए सुनते हैं, तो हम इज़राइल को संयुक्त राज्य अमेरिका के बराबर मान लेते हैं।

और इज़रायल के बारे में ये अंश अंततः संयुक्त राज्य अमेरिका के बारे में हैं। यह व्याख्यात्मक कदम दो विशिष्ट कारणों से एक समस्या है। पहला, यह धार्मिक दृष्टि से बुरा है।

ईश्वर का इस्राएल के साथ एक विशिष्ट वाचा संबंध था जो संयुक्त राज्य अमेरिका सहित किसी अन्य राष्ट्र के साथ नहीं था। यह एक बुरा ऐतिहासिक और राजनीतिक रूपक भी है क्योंकि इस्राएल जैसे उत्पीड़ित राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने के बजाय, हम मिस्र, अशशूर और बेबीलोन जैसे अधिक शक्तिशाली राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम अशशूरियों या बेबीलोनियों की तरह एक दुष्ट साम्राज्य नहीं हो सकते हैं, लेकिन अंततः, जिस तरह से हम उनके अपराधों को जारी रखते हैं और जिस तरह से हम उनके उत्पीड़न, उनकी हिंसा, उनके लालच, उनके दुर्व्यवहार, उनके अन्याय का अनुसरण करते हैं, अंततः हम उसी तरह ईश्वर के प्रति जवाबदेह होंगे जैसे वे थे।

मैं इस मुद्दे से संबंधित एक पुस्तक के उद्धरण के साथ समापन करना चाहता हूँ, जिसे मैंने हाल ही में पढ़ा था, पीटर लीथर्ट की पुस्तक बिटवीन बेबेल एंड बीस्ट। और वह इस बारे में बात करता है कि हमें बाइबिल के प्रकाश में अमेरिका को एक साम्राज्य के रूप में कैसे देखना चाहिए। क्या हमें अमेरिका को ईश्वर के वाचा वाले लोगों के रूप में देखना चाहिए, या संयुक्त राज्य अमेरिका

ईश्वर के लोग हैं, और क्या उन्हें इज़राइल के बराबर माना जाना चाहिए? मुझे लगता है कि वह हमें यहाँ कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण देता है और मैं इसके साथ समापन करना चाहता हूँ।

वे कहते हैं, ईसाई मूल्यों और अमेरिकीवाद की अर्ध-ईसाई विचारधारा से प्रेरित होकर, अमेरिका कई महान शक्तियों की तुलना में अधिक उदार है। लेकिन अंत में, हम बस एक और महान शक्ति हैं, दुनिया का एक और राष्ट्र जो अपने हितों में काम कर रहा है जबकि खुद को यह बताता है कि हमारे दिल में दुनिया का सर्वोत्तम हित है। जहाँ तक हम दुनिया को अपनी छवि में ढालना चाहते हैं, हम एक बेबल हैं।

हम जानवर नहीं हैं, लेकिन अगर इससे हमारे राजनीतिक उद्देश्य पूरे होते हैं तो हम जानवरों के साथ खुलकर संबंध बनाते हैं। मुझे आश्चर्य है कि हम खुद को पशुवत आदतों में डाले बिना इस अवस्था में कब तक रह सकते हैं। हालाँकि, अभी अमेरिका बेबल और जानवर के बीच खड़ा है।

मुझे लगता है कि यह इसका आकलन करने का एक अच्छा तरीका है। तो, ईसाइयों के लिए संदेश। याद रखें कि आप सबसे पहले और आखिरी में यीशु के हैं।

याद रखें कि चर्च, अमेरिका नहीं, मसीह का शरीर है और भविष्य की राजनीतिक आशा है। याद रखें कि चाहे उसने ईश्वर के शहर की कितनी भी सेवा की हो, अमेरिका अपने आप में मनुष्य के शहर का हिस्सा है। याद रखें कि यूचरिस्ट हमारा बलिदानी पर्व है।

अमेरिकी चर्चों ने बहुत समय से ईसाइयों को अमेरिकीवाद में अनुशासित किया है, और यह अमेरिकी राजनीति में ईसाइयों की भागीदारी को कभी-कभी जितना होना चाहिए, उससे कहीं अधिक सहज बनाता है। चर्चों को अपने अमेरिकीवाद से पश्चाताप करना चाहिए और शहीदों, विश्वासियों को विकसित करना शुरू करना चाहिए जो गवाह के मूल अर्थ में शहीद हैं और बाद के अर्थ में पुरुष और महिला हैं, जो शाही क्रूस तक मेमने का अनुसरण करने के लिए तैयार हैं। नहूम और ओबद्याह की पुस्तकों में क्रमशः अश्शूर और एदोम के बारे में परमेश्वर ने जो संदेश दिया है, वह केवल ऐतिहासिक सबक नहीं हैं।

वे राष्ट्रों के साथ परमेश्वर के व्यवहार की शक्तिशाली अभिव्यक्तियाँ हैं और उस परम न्याय की याद दिलाते हैं जिसे परमेश्वर सभी बुराई, सभी हिंसा और अपने राज्य के प्रति सभी प्रतिरोध के विरुद्ध लाने जा रहा है।

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला में है। यह ओबद्याह पर व्याख्यान 23 है।